Shrimad
Rajchandra
Mission
Delhi

# शिक्षापाठ 56

# क्षमापना

REFERENCE HANDOUT
PARYUSHAN PARV 2019

# शिक्षा पाठ 56
# क्षमापना

**परिभ्रमण का मूल कारण**

हे भगवान! मैं बहुत भूल गया,

मैंने आपके अमूल्य वचनों को लक्ष्य में नहीं लिया।

आपके कहे हुए अनुपम तत्त्वों का मैंने विचार नहीं किया।

आपके प्रणीत किए हुए उत्तम शील का सेवन किया नहीं।

आपकी कही हुई दया, शांति, क्षमा और पवित्रता को मैंने पहचाना नहीं।

**परिभ्रमण के कारणों का परिणाम**

हे भगवान! मैं भूला, भटका, घूमा-फिरा और अनंत संसार की विडम्बना में पड़ा हूँ।

मैं पापी हूँ।

मैं बहुत मदोन्मत्त और कर्मरज से मलिन हूँ।

**भक्त का निश्चय**

हे परमात्मन! आपके कहे हुए तत्त्वों की बिना मेरा मोक्ष नहीं।

मैं निरंतर प्रपंच में पड़ा हूँ।

अज्ञान से अंध हुआ हूँ,

मुझमे विवेकशक्ति नहीं है और मैं मूढ़ हूँ, मैं निराश्रित हूँ, अनाथ हूँ।

**भक्त के निश्चय के पश्चात की शरणागति**

निरागी परमात्मन! मैं अब आपके, आपके धर्म की और आपके मुनियों की शरण लेता हूँ।

**भक्त की शरणागति का कारण**

मेरे अपराधों का क्षय होकर मैं उन सभी पापों से मुक्त होऊँ, यही मेरी अभिलाषा है।

**शरणागति की सफलता कब?**

पूर्वकृत पापों का अब मैं पश्चाताप करता हूँ।

ज्यों-ज्यों मैं सूक्ष्म विचारों से गहरा उतरता हूँ त्यों-त्यों आपके तत्त्वों के चमत्कार मेरे स्वरूप का प्रकाश करते हैं।

**शरणागति से स्वरूप का निर्णय**

आप निरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंद स्वरूप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी और त्रैलोक्य प्रकाशक हैं।

**क्षमापना का परिणाम**

मैं मात्र अपने हित के लिए आपकी साक्षी में क्षमा चाहता हूँ।

एक पल भी आपके कहे हुए तत्त्वों की शंका न हो,

आपके बताए हुए मार्ग पर अहोरात्र मैं रहूँ, यही मेरी आकांक्षा और वृत्ति हो!

**ज्ञात-अज्ञात पाप की क्षमापना**

हे सर्वज्ञ भगवन! आपसे मैं विशेष क्या कहूँ? आपसे कुछ अज्ञात नहीं है। मात्र पश्चाताप से कर्मजन्य पाप की क्षमा चाहता हूँ।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

Shrimadji wrote the Kshamapna Paath at the age of 16 for His publication known as “Mokshmaala” — a series of 108 articles laying down the foundation of Moksh-marg.

Shrimad
Rajchandra
Mission
Delhi

srmdelhi.org | 709 8888 388